जारवा समुदाय के दिलों में भूत-प्रेत, जादू-टोना जैसे अंधविश्वासों ने गहरी पैठ बना रखी है । कई बार वे अपने बीमार संतानों की हत्या इसलिए कर देते हैं कि उन्हें लगता है कि उस पर भूत-प्रेत की छाया है । बालिका के सयानी होने पर उनके समुदाय में समारोह का आयोजन होता है और तब उसे युवती घोषित किया जाता है । इसी प्रकार यदि कोई बालक अपने स्वयं के प्रयासों से पहली बार जंगली शुकर का शिकार करके लाता है तो उसे युवक घोषित किया जाता है । जारवा जाति पुनर्जन्म पर विश्वास रखती है । उनकी आस्था के अनुसार भगवान आकाश रूपी स्वर्ग में विराजमान हैं । समुदाय में ओझा का प्रचलन भी है । ऐसा माना जाता है कि उसके पास अलौकिक शक्तियाँ होती हैं और वह भगवान से या स्वर्ग से सीधे संपर्क कर सकता है ।

जारवा जाति में अल्पायु में मरने वालों को घर के पास गाड़ दिया जाता है और वे उस घर को छोड़ कर कहीं अन्यत्र चले जाते हैं । वयस्क को कहीं दूर पत्थरों और लकड़ियों के नीचे किन्तु ज़मीन से ऊपर दबा दिया जाता है । बाद में उनकी अस्थियों को एकत्रित करके उनके आभूषण बनाकर पहनते हैं ।

संपर्क कार्यक्रम

पहले तो बाहरी व्यक्ति जारवा को एक आँख भी नहीं सुहाते थे और उन पर हमला कर देते थे । किन्तु अंडमान तथा निकोबार प्रशासन की पहल से उनसे संपर्क साधने के लिए संपर्क कार्यक्रम चलाया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि सन् 1974 में उत्तरी और मध्य अंडमान के जारवा तथा सन् 1989 में दक्षिण अंडमान के जारवा से संपर्क साधने में कामयाब हुए । सन् 1997 में कदमतल्ला जेट्टी के पास नाली में एक इनमेई नामक जारवा का पैर टूट गया था और जारवा समुदाय ने उसे वहाँ छोड़ दिया था । प्रशासन ने उसकी मदद की और उसे स्वस्थ कर दिया । इसके परिणामस्वरूप उनके बाहरी लोगों के प्रति उग्र व्यवहार में परिवर्तन आया और वे शनैः-शनैः आधुनिक समाज के समीप आने लगे और आधुनिक समाज के प्रति उनके रवैये, अभिवृत्ति और सोच में बदलाव आया । इस संपर्क कार्यक्रम के सुखद और दुखद परिणाम दोनों ही सामने आए । एक ओर जहाँ तो इन्हें चिकित्सालय, पुलिस सेवाओं, आधुनिक वस्त्रों आदि का ज्ञान हुआ, तो दूसरी ओर हमारे शिक्षित आधुनिक समाज ने उनकी परिस्थितियों को न समझते हुए उनका शोषण करना चाहा, उनके आरक्षित निवास स्थल के आस-पास के जंगलों में शिकार करने लगे और उन्हें खिलाने-पिलाने के लिए आधुनिक खान-पान दिया गया जिसका उन पर दुष्प्रभाव पड़ा । ऐसा भी ज्ञात हुआ है कि कुछ जरवा तम्बाकू और मद्य के आदी होने लगे हैं । जारवा को सबसे अधिक आवश्यकता चिकित्सा की पड़ती है । आधुनिक समाज से मिलने के बाद कदमतल्ला और पोर्ट ब्लेयर के दुशनाबाद में स्थित अस्पतालों में चिकित्सा करवाने आने लगे हैं । उनके क्षेत्र में शिकार करने वालों को पुलिस के हवाले करने लगे हैं और आधुनिक परिधानों के प्रति गहरी रूचि दिखाने लगे हैं ।

उपसंहार

जारवा पाषाण युग की जाति है और उनके रहन-सहन, खान-पान, परम्परा-संस्कृति आदि आज के समाज से संपूर्ण रूप से भिन्न है । किन्तु उनके भारतीय नागरिक होने के सत्व को नकारा नहीं जा सकता है और इस कारण भारतीय नागरिकों को प्राप्त सारे अधिकार उन्हें भी हासिल हैं । इस प्रकार से जरावा की बुनियादी आवश्यकताओं में सर्वप्रथम उनकी चिकित्सा है जो कि आजकल उन्हें दी जाने लगी है । जहाँ पुलिस उनके क्षेत्रों के संरक्षण में जुटी हुई है तो अन्य को उनके क्षेत्रों में जाने की मनाही है । यह ऐसी जाति है जिसके पास विलक्षण प्रतिभाएँ हैं, जैसे तीर से अचूक निशाना लगाकर सुअरों, जानवरों और यहाँ तक कि मछलियों व कछुओं को भी मारना है । उनमें इतनी शक्ति होती है कि वे लगभग 200 किलो भार तक उठाकर खड़े रह सकते हैं, तो समुद्र में 2 से 3 किलोमीटर की दूरी तैर कर पार सकते हैं या ज़मीन पर लगातार 20 से 30 किलो मीटर चल सकते हैं । इसमें कोई आश्चर्य नहीं होगा यदि आधुनिक समाज के साथ जुड़ने के बाद इन्हें चलने के स्थान पर बस सुविधाएं मिलने लगे, तैरने के स्थान पर नौकाओं की सुविधाएं मिलने लगे और खाने के लिए मरे हुए सुअर, मछलियाँ, कछुए और छत्ते से तोड़कर शहद बोतलों में मिलने लगे तो इनकी चलने, तैरने, अचूक निशाना लगाने की नैसर्गिक प्रतिभा कुंद पड़ने लगेगी और ये प्रतिभाऐं धीरे-धीरे विलुप्त हो जाएगी ।

यह निर्विवाद सत्य है कि उन्हें आज की आधुनिक सभ्यता की आवश्यकता है किन्तु एक शिक्षित समाज को भी यह समझना चाहिए कि एक जाति जो प्रायः विलुप्त होने वाली थी उसे किस प्रकार से संरक्षण प्रदान किया जाए । हमारी समझ ही जारवा के उत्थान के लिए सहायक होगी । वैसे तो जरवा, उनके आवास और उनकी संस्कृति के संरक्षण के लिए सरकारी स्तर